दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक विषय)

प्रश्नपत्र- प्रथम

[प्लेटो, अरस्तू, तर्कवाद (डेकार्ट, स्पिनोज़ा, लाइबनित्ज़), अनुभववाद (लॉक, बर्कले, ह्यूम), काण्ट, हीगल]

DTVF/17–OPS-**P3**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): MUKESH KUMAR LUNAYAT

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03/13/08/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

1	2	5	5	9	0	5

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): HINDI

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Mukesh

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

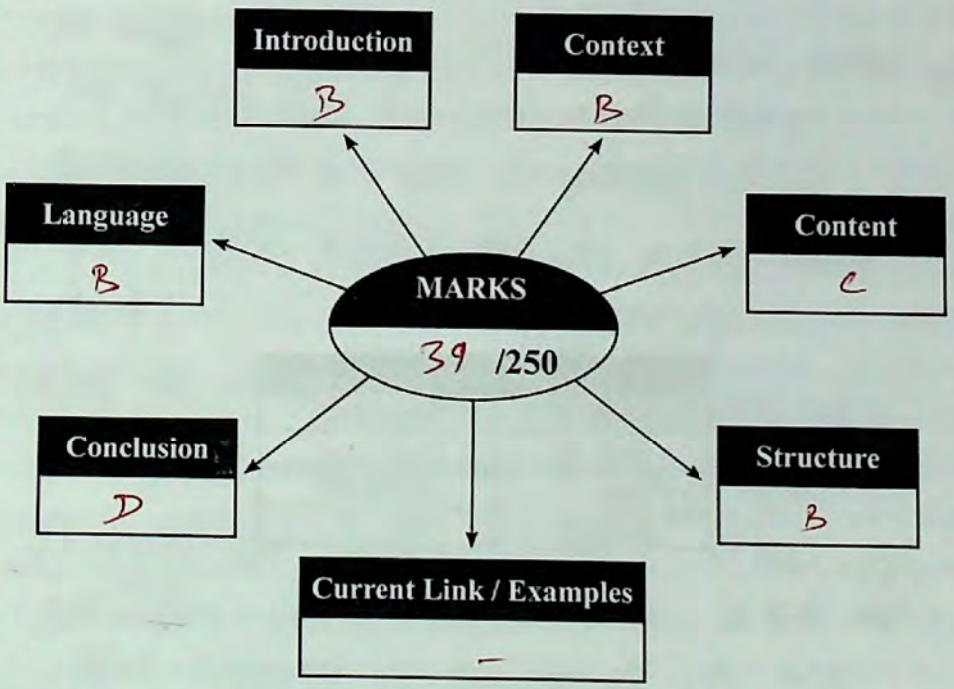

Copyright – Drishti The Vision Foundation

व्यापक विश्लेषण / Macro Analysis

- सभी प्रश्नों को हल करने का प्रयास करें।
- आपकी मेहनत सराहनीय है। आशा है आप जटिलता को दूर करने का प्रयास करेंगे।
- अनावश्यक लिखने से बचें।

Grade Card	
Grade 'A'	Very Good
Grade 'B'	Good ✓
Grade 'C'	Satisfactory
Grade 'D'	Poor

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - A / SECTION - A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें: 10 × 5 = 50

Answer each of the following in about 150 words:

(a) "जो आनुभविक है वो पूर्ण सत् नहीं है और जो पूर्ण सत् है वो आनुभविक नहीं है" -प्लेटो।
"Which is emperical is not absolutely real and that which is absolutely real is not emperical" –Plato.

उपर्युक्त ~~उपरोक्त~~ कथन का संदर्भ प्लेटो के प्रत्यय सिद्धांत से है। प्लेटो के अनुसार प्रत्यय सामान्य है। ये वर्ग विशेष के सारतत्व है। यह वर्ग विशेष का अनिवार्य व सार्वभौम तत्व है। प्रत्ययों की सत्ता वर्गविशेषों से पूर्व व परे है। (जैसे गोत्व, मनुष्यत्व)

प्लेटो के अनुसार वही ~~ज्ञान~~ ज्ञान है जो नित्य, शाश्वत, अपरिवर्तनशील; सार्वभौम एवं वस्तुनिष्ठ हो। चूँकि ऐसे ज्ञान के विषय ~~सांसारिक~~ सांसारिक वस्तु विशेष नहीं हो सकते है क्योंकि वे अनित्य, परिवर्तनशील, सीमित एवं विनाशी होती है। चूंकि सांसारिक विषय आनुभविक होते है। अतः ये पूर्ण सत् नहीं हो सकते है क्योंकि आनुभविक ~~ज्ञान~~ ज्ञान व वस्तु संभाव्य होते है।

प्लेटो के मतानुसार केवल प्रत्यय ही नित्य, शाश्वत, सार्वभौम एवं वस्तुनिष्ठ सत् है। ~~परंतु~~ प्रत्ययों की सत्ता ~~इस~~ लौकिक जगत में न होकर पारलौकिक जगत में है। अर्थात् प्रत्ययों का ज्ञान अनुभव के माध्यम से नहीं प्राप्त

कथन में प्लेटो ने प्रत्ययों की पूर्ण सत् प्रकृति और जगत की अर्द्ध सत् एवं अर्द्ध असत् प्रकृति का उल्लेख करने का प्रयास किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो सकती है। पूर्ण सत् से युक्त प्रत्यय अनुभव के विषय नहीं है। इसी संदर्भ में प्लेटो ने कहा है कि जो आनुभविक है वो पूर्ण सत् नहीं है और जो पूर्ण सत् है वो आनुभविक नहीं है।

प्रश्न की प्रकृति और माँग के अनुरूप उत्तर लिखें।

1½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	0.5	0.5	.25		-	✓
Grade	B	P	P	P		-	-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) डेकार्ट की तत्वमीमांसा का मार्ग उसकी ज्ञानमीमांसा से होकर ही निकलता है। स्पष्ट करें।

The way to Metaphysics of Descartes passes through his epistemology. Explain.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डेकार्ट के दर्शन का उद्देश्य गणित की भाँति दर्शन के क्षेत्र में स्पष्ट, अकाट्य एवं असंदिग्ध ज्ञान की स्थापना करना है। डेकार्ट इस हेतु संदेह विधि प्रतिपादित करते हैं, जिसके आधार पर अंततः आत्मा की सत्ता को स्थापित करते हैं।

प्रचलित मान्यताओं, रीति आदि के कारण भी संदेह विधि की आवश्यकता पड़ी।

डेकार्ट अपनी संदेह विधि हेतु निर्धारित 4 दार्शनिक नियमों एकता का नियम, विश्लेषण का नियम, संश्लेषण का नियम एवं प्रामाणिकता के नियम के आधार पर उस सभी पर संदेह करते हैं, जिन पर संदेह किया जा सकता है। यथा :-

(i) इंद्रिय-प्रदत्त ज्ञान पर संदेह :- डेकार्ट मतानुसार इंद्रियप्रदत्त ज्ञान पर संदेह किया जा सकता है क्योंकि कभी-कभी हमारी इंद्रियां हमें भ्रमात्मक ज्ञान (जैसे- रस्सी में सर्प का ज्ञान) प्रदान करती है।

(ii) गणितीय ज्ञान पर संदेह :- यद्यपि प्रथम दृष्टया '2+2=4' हमें असंदिग्ध ज्ञान लगता है परन्तु डेकार्ट मतानुसार इस पर संदेह किया जा सकता है क्योंकि हो सकता है कि हम एक शैतान के वश में आकर एक दिशा में सोच रहे हैं।

परंतु डेकार्ट मतानुसार संदेह करने कि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में इस तथ्य पर संदेह नहीं किया जा सकता कि मैं (आत्मा) संदेह कर रहा हूँ। अर्थात् संदेह करने हेतु मेरा होना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अस्तित्व अनिवार्य है।
चूँकि संदेह करना एक चेतन क्रिया है अतः संदेह के क्रम में चेतन तत्व का होना आवश्यक है। यही चेतन तत्व आत्मा है। डेकार्ट इसे cogito ergo sum (I think therefore I am) कहते हैं।
डेकार्ट के इस विधि निष्कर्ष निगमित किये जा सकते हैं-
(i) आत्मा का अस्तित्व है।
(ii) ईश्वर का अस्तित्व है।
(iii) बाह्य जगत का अस्तित्व है।
स्पष्टतः डेकार्ट की तत्वमीमांसा का मार्ग उनकी ज्ञानमीमांसा से होकर निकलता है।

आलोचना
(i) कांट एवं ह्यूम के अनुसार विचार मात्र से विचार का सत्यता सिद्ध होती है, वस्तु का अस्तित्व नहीं।
(ii) स्वामसन मतानुसार आत्मा पूर्ण चेतना है, वह ज्ञाता है, डेकार्ट इसे ज्ञेय समझने की दार्शनिक भूल करते हैं। पुनः "cogito ergo sum" एक पुनरुक्ति मात्र है जो पुनरावृत्ति व अतिरेक के दोष से ग्रसित है।

छोटी टिप्पणी वाले उत्तरों में आलोचना आदि लिखने की आवश्यकता नहीं है। यह लिखना गलत नहीं है, किन्तु नहीं लिखने से कोई अधिक प्रभाव भी नहीं पड़ेगा।

5

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.5	2	1.5	0.5	-	0.5	-
Grade	A	A	B	B	-	A	-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) स्पिनोज़ा का दर्शन सर्वेश्वरवादी क्यों हो जाता है?

Why the philosphy of Spinoza becomes pantheism?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्पिनोज़ा के अनुसार द्रव्य नित्य, शाश्वत, स्वयंभू, एवं सर्वसमावेशी है। चूँकि यही ईश्वर की आध्यात्मिक परिभाषा है अतः स्पिनोज़ा द्रव्य को ईश्वर की संज्ञा देते हैं।

स्पिनोज़ा के अनुसार जिस प्रकार त्रिभुज की परिभाषा से ही यह सिद्ध होता है कि उसके तीनों कोणों का योग 2 समकोण के समान होता है। उसी प्रकार ईश्वर के प्रत्यय से ही सम्पूर्ण जगत को निगमित किया जा सकता है। अर्थात् ईश्वर ही विश्व है, विश्व ही ईश्वर है।

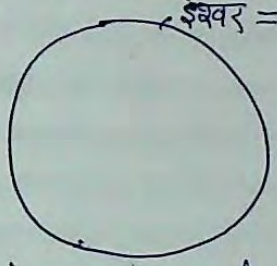

ईश्वर = विश्व

स्पिनोज़ा के दर्शन का उद्देश्य तत्व की विवेचना करना नहीं, बल्कि आध्यात्मिक तत्व का अनुसंधान करना था।

इस प्रकार स्पिनोज़ा का दर्शन सर्वेश्वरवाद हो जाता है। स्पिनोज़ा का दर्शन ज्यामितीय विधि पर आधार है। स्पिनोज़ा मतानुसार जिस प्रकार ज्यामिति में हम केवल एक ही तत्व स्थान (SPACE) की सत्ता मानते हैं, तथा अन्य सभी आकृतियों को उसी के भाग के रूप में मानते हैं।

उसी प्रकार ईश्वर ही एकमात्र तत्व है जो निर्गुण एवं निराकार है। जिस प्रकार ज्यामिति में पूर्ण स्थान (PURE SPACE) की प्राप्ति हेतु उसे सीमांकन से रहित करना आवश्यक है, उसी प्रकार ईश्वर की सर्वव्यापी सिद्धि हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सीमित गुणों के आरोपण से परे रखना आवश्यक है।

आलोचना

(i) स्पिनोज़ा का सर्वेश्वरवाद, सर्वात्मवाद का मार्ग प्रशस्त करता है क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत में मानसिक तत्व को ही व्याप्त करता है।

(ii) पुनः सर्वेश्वरवाद को मानने पर अशुभ की समस्या। परिवर्तन, विकास, इच्छा स्वातंत्र्य आदि की व्याख्या नहीं हो पाती है।

ईश्वर जगत में अंशी-अंश का सम्बंध नहीं, बल्कि सम्व्याप्ति, अभियोज्यता और अधिष्ठान का सम्बंध है।

4½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.5	2	1.5	.5	–	–	–
Grade	A	A	B	A	–	–	–

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(e) यदि समस्त विश्व चेतन चिदणुओं से निर्मित है तो जड़ पदार्थ का अनुभव क्यों होता है?

If all the world is made of Conscious monads then why we experience material things?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बुद्धिवादी दार्शनिक लाइबनिज मोनड को विश्व का मौलिक द्रव्य मानते हैं। लाइबनित्ज मतानुसार विश्व का परम तत्व मोनड सरल, निरवयव, नित्य, शाश्वत एवं अविभाज्य हैं। विश्व की सभी वस्तुएँ मोनड मात्र से बनी हैं फलतः चेतन हैं।

चूँकि लाइबनित्ज विशुद्ध जड़-पदार्थ की सत्ता स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि वे जड़तत्व में भी चेतना मानते हैं।

Good

प्रश्न उठता है कि यदि समस्त चेतन मोनडों से निर्मित है तो जड़ पदार्थ का अनुभव क्यों होता है?

लाइबनित्ज इस हेतु मूल जड़ता एवं गौण जड़ता आधारित तर्क देते हैं।

(क) मूल जड़ता → लाइबनित्ज मतानुसार मूल जड़ता के कारण हमें वस्तुएँ जड़ एवं निष्क्रिय प्रतीत होती हैं। वस्तुतः यह प्रत्यक्ष की अवरोधक शक्ति है जिससे वस्तुएँ जड़ प्रतीत होती हैं। ध्यातव्य है कि लाइबनित्ज के निरंतरता के नियम के अनुसार मोनड पिरैमिडीय रूप में होते हैं जिनमें निम्न स्तर पर अचेतन मोनड (mere monads) – यांत्रिक वस्तु आदि होती हैं जिनमें चेतना का निम्नतर स्तर पाया जाता है।

5½

(ख) गौण जड़ता – लाइबनित्ज मतानुसार निम्न स्तरीय मोनड़ों में समूहीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है फलतः समूहीकरण के कारण ये मोनड़ जड़ प्रतीत होते हैं, एवं हमें इनमें विस्तार का अनुभव होता है।

स्पष्ट है कि लाइबनित्ज के मोनड ही इस विश्व के मूल निर्णायक तत्व हैं, विश्व में शुद्ध जड़ पदार्थ जैसी कोई वस्तु ही नहीं होती।

आलोचना – लाइबनित्ज का उपरोक्त मत एक मान्यता (assumption) मात्र है इसे सिद्ध या असिद्ध नहीं किया जा सकता। पुनः इस व्यवहार ... उपयोगी ...

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. (a) जहाँ तक स्पिनोजा के ईश्वर की अवधारणा का प्रश्न है यह शंकर के ब्रह्म से दृढ़ समानता दर्शाता है। कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। 20

Spinoza's God marks a strong resemblance with Shankar's Brahman as far as its conceptualization is concerned. Critically examine the statement. 20

स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर नित्य, शाश्वत, स्वयंभू, स्वतंत्र एवं अपरिवर्तनशील सत्ता है। ईश्वर तत्वमीमांसीय एवं ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से अपने अस्तित्व एवं ज्ञान हेतु किसी अन्य तत्व पर निर्भर नहीं है।

स्पिनोजा ने ज्यामितीय आधार पर ईश्वर की बौद्धिक एवं तार्किक व्याख्या की है। स्पिनोजा के अनुसार जिस प्रकार ज्यामिति में त्रिभुज की परिभाषा से ही यह स्पष्ट है कि इसके तीनों कोणों का योग दो समकोणों के समान है, उसी प्रकार द्रव्य से भी सम्पूर्ण जगत को निगमित किया जा सकता है। चूंकि मनुष्य सीमित व सांत है अतः वह ईश्वर का वर्णन नहीं कर सकता वस्तुतः ईश्वर अवर्णनीय है।

स्पिनोजा का ईश्वर निर्गुण एवं निराकार है। यहाँ निर्गुण का आशय गुणों के रहित होने से नहीं है। अपितु ईश्वर अनंत गुणों से युक्त है जो असीमित माना है। परन्तु चूंकि मनुष्य, संकल्प, बुद्धि आदि ईश्वर का सांत पर्याय है अतः सीमित एवं सांत (finite) मनुष्य द्वारा ईश्वर पर किया गया कोई भी गुणों का आरोपण अनन्त एवं अपरिमित ईश्वर को सीमित एवं सांत कर देगा। अतः ईश्वर पर मानवीय गुणों का आरोपण नहीं किया जा सकता है। ~~[illegible]~~ ईश्वर को केवल 'नेति-नेति' के रूप में ही जाना जा सकता है।
ध्यातव्य है कि स्पिनोजा का उपरोक्त ईश्वर विचार शंकर के अद्वैतवेदांत के ब्रह्म से दृढ़ समानताएँ दर्शाता

अनावश्यक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है।
यथा
i) शंकर की भाँति स्पिनोज़ा ने भी ईश्वर की व्याख्या 'नेति - नेति' के रूप में की है। दोनों ने ईश्वर (शंकर का ब्रह्म) को अवर्णनीय माना है।

(ii) स्पिनोज़ा ईश्वर को ही एकमात्र परम सत् मानते है तथा मनुष्य, बुद्धि, संकल्प, शरीर, जड़पदार्थ आदि को ईश्वर का पर्याय (Mode) मात्र मानते है।
शंकर भी पारमार्थिक दृष्टिकोण से ब्रह्म को ही एकमात्र सत् मानते है।

परन्तु उपरोक्त इन समानताओं के बावजूद शंकर के ब्रह्म व स्पिनोज़ा के ईश्वर में उल्लेखनीय भिन्नताएँ भी है :- यथा

(i) जहाँ स्पिनोज़ा विश्व को ही ईश्वर एवं ईश्वर को ही विश्व मानकर विश्व को ईश्वर के समान सत् (ईश्वर=विश्व) मानते है।
वहीं शंकर पारमार्थिक दृष्टिकोण से जगत को असत्; मिथ्या मानते है।

(ii) स्पिनोज़ा के दर्शन में मनुष्य को ईश्वर का सांत पर्याय (finite version) माना गया है।
इसके विपरीत शंकर जीव को ब्रह्म से भिन्न नहीं मानते है। शंकर मतानुसार जीव मूलत: ब्रह्म ही है। (जीवो ब्रह्मैव नापर:)

(iii) स्पिनोज़ा के दर्शन की परिणति सर्वेश्वरवाद में होती है, वहीं शंकर का दर्शन अद्वैतवाद कहलाता है। शंकर का ब्रह्म व्यावहारिक जगत में व्याप्त नहीं है, वह परमार्थ में है।
वहीं स्पिनोज़ा के दर्शन में प्रातिभासिक, व्यावहारिक एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पारमार्थिक जगत का विभाजन नहीं किया गया है।

- पुनः स्पिनोजा जगत को ईश्वर की प्रकृति का स्वाभाविक परिणाम (Intellectual Necessity) मानते हैं; वहीं शंकर का ब्रह्म जगत का सृष्टिकर्ता न होकर व्यावहारिक जगत का ईश्वर जगत का सृष्टिकर्ता है।

स्पष्ट है कि शंकर के ब्रह्म एवं स्पिनोजा के ईश्वर में न केवल समानताएँ हैं अपितु इन असमानताएँ भी है।

8

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक्त न लिखें।
(Please do not write anything except question number in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.5	5	2	0.25	-	0.25	-
Grade	A	A	C	B	-	B	-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(b) क्या लाइबनित्ज़ अपने पूर्ववर्ती दार्शनिकों की तुलना में मन-देह संबंध की सुसंगत व्याख्या करने में अधिक सफल रहे हैं? 15

Has Leibniz been more successful in consistent interpretation of mind body relation than to his predecessor philosphers? 15

मन एवं शरीर के मध्य संबंध की स्थापना बुद्धिवादी दार्शनिकों - डेकार्ट, स्पिनोजा व लाइबनित्ज में एक समस्या रही है। सभी दार्शनिकों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से मन शरीर संबंध की व्याख्या की है।

लाइबनित्ज ने मोनडो में ईश्वर द्वारा रचित पूर्व स्थापित सामंजस्य (P.E.H.) के आधार पर मन-देह संबंध की व्याख्या की है। लाइबनित्ज के मतानुसार मन व शरीर के संबंध को ताली के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। लाइबनित्ज के अनुसार हमारे मस्तिष्क में ताली बजाने के विचार के बाद ही हम हाथों से ताली बजाते हैं। लाइबनित्ज का कहना है कि यहाँ मन के मोनडो एवं हाथों के मोनडो में कारण-कार्य अथवा पूर्व-अपर संबंध न होकर साहचर्य संबंध है। मन में ताली बजाने के विचार एवं हाथों द्वारा ताली बजाने में साहचर्य संबंध है।

लाइबनित्ज मतानुसार ईश्वर पूर्व स्थापित सामञ्जस्य के माध्यम से अपनी दैवीय योजना को प्रभावित करता है। मन व शरीर के मोनडो के मध्य कोई क्रिया-प्रतिक्रिया (डेकार्ट) नहीं होती अपितु ठीक उसी प्रकार साहचर्य पाया जाता है जिस प्रकार विभिन्न वादक वाद्य यंत्र बजाते हुए उनके प्रति प्रतिक्रिया नहीं करते हैं, अपितु

डेकार्ट और स्पिनोजा द्वारा मन शरीर द्वैत की समस्या का समाधान किस प्रकार किया गया। इसका उल्लेख कीजिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साहचर्य के आधार पर तान (sympony) की उत्पत्ति करते हैं। उसी प्रकार मन व शरीर आपस में सहक्रिया करते हुए ईश्वर की दैवीय योजना को प्रकाशित करते हैं।

डेकार्ट, स्पिनोजा व लाइबनित्ज के मन-देह संबंध को एक इमारत पर टंगी तीन घड़ियों के उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है।

(i) ये तीनों घड़ियां एक दूसरे को ठीक उसी प्रकार प्रभावित करती हैं जिस प्रकार परस्पर भिन्न होते हुए भी घुड़सवार की क्रिया पर घोड़ा प्रतिक्रिया देता है। - डेकार्ट (क्रिया-प्रतिक्रियावाद)

(ii) एक ही उद्गम से निकलकर समानान्तर प्रवाहित होने के कारण तीनों घड़ियाँ एक समान समय दिखाती हैं - स्पिनोजा (समानान्तरवाद)

(iii) ईश्वर ने उन तीनों घड़ियों की पूर्व स्थापित सामंजस्य स्थापित रचना की है फलत: वे एक समान समय दिखाती हैं - लाइबनित्ज (P.E.H.)

अनावश्यक

ध्यातव्य है कि यद्यपि मन-देह संबंध के संदर्भ में लाइबनित्ज का मत उसके पूर्ववर्ती मतों से बेहतर है परन्तु यह भी कमियों से युक्त है।
वस्तुत: इन तीनों दार्शनिकों द्वारा कहीं न कहीं मन व शरीर को अलग-अलग मानकर उनमें संबंध निर्धारित करने का प्रयास किया है परन्तु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
तखें।
ase do not write
hing except the
tion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

व्यवहार में हम मन व शरीर का अनुभव पृथक-पृथक न कर शरीरयुक्त आत्मा अथवा आध्यात्मिक शरीर के रूप में करते हैं।
पुनः यदि मन व शरीर को भिन्न-भिन्न माना जाए तो हमारी सभी अनुभूतियाँ वैयक्तिक हो जाएंगी फलतः हमें भाषा के प्रयोग की शर्तों का उल्लंघन करना पड़ेगा।

8

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.5	1.5	0.5	0.25	-	0.25	-
Grade	A	C	D	B	-	B	-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - B / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें: $10 \times 5 = 50$

Answer each of the following in about 150 words:

(a) ज्ञान का त्रिघटकीय सिद्धांत - लॉक।

Three factor theory of knowledge – Locke.

लॉक मतानुसार ज्ञान के प्रत्यक्ष के 3 घटक है। (i) ज्ञाता
(ii) प्रत्यय [द्वितीयक व प्राथमिक गुणों का आधार है]
(iii) ज्ञान का विषय (ज्ञेय)

लॉक मतानुसार ज्ञाता व ज्ञेय के मध्य का संबंध प्रत्यय के माध्यम से निर्धारित होता है।

लॉक मतानुसार हमें द्रव्य का साक्षात प्रत्यक्ष का विषय नहीं है बल्कि प्रत्यय रूपी प्रतिनिधि के अधिष्ठान के रूप में द्रव्य का अनुमान किया जाता है। इसी कारण लॉक के ज्ञान का प्रत्यक्ष सिद्धांत "प्रतिनिधिमूलक प्रत्ययवाद" कहलाता है। यहाँ द्रव्य ज्ञान का विषय अर्थात ज्ञेय है। ज्ञाता को द्रव्य का ज्ञान साक्षात प्रत्यक्ष से न होकर प्रत्यय के अधिष्ठान के रूप में अनुमान के रूप में होता है। चूंकि यहाँ ज्ञान हेतु तीन घटकों - ज्ञाता, ज्ञेय एवं प्रत्यय का होना आवश्यक माना गया है, इसी कारण लॉक का यह ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत ज्ञान का "त्रिघटकीय सिद्धांत" कहलाता है।

प्रभाकर मीमांसा 'त्रिपुटीप्रत्यक्षवाद' से तुलना की जा सकती थी

8

आलोचना

(i) मूर के अनुसार प्रत्यय ज्ञान की प्रक्रिया है, इसे ज्ञान का साधन नहीं माना जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) लॉक और बर्कले के मूल गुण तथा उप गुण का प्रत्यय।

The idea of primary qualities and secondary qualities of Locke and Berkeley.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुभववादी दार्शनिक लॉक ने द्रव्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि द्रव्य वह है जो गुणों को आश्रय प्रदान करता है। अर्थात् गुण वह है जिनमें द्रव्य को निर्मित करने की शक्ति निहित है।

लॉक गुणों का विभाजन प्राथमिक व गौण गुणों के रूप में करते हैं।

प्राथमिक गुण :- प्राथमिक गुण वे गुण हैं जो द्रव्य के अनिवार्य भाग हैं। ये गुण किसी भी द्रव्य में अनिवार्यतः पाये जाते हैं। इन्हें द्रव्य से अलग व पृथक नहीं किया जा सकता है। ये संख्या में छह हैं :- विस्तार, घनत्व, आकृति, गति, स्थिति संख्या।

प्राथमिक गुण	गौण गुण
1. विस्तार	1. रंग
2. घनत्व	2. रूप
3. आकृति	3. स्पर्श
4. गति	4. गंध आदि
5. स्थिति	
6. संख्या	

गौण गुण :- गौण गुण वे गुण हैं जो द्रव्य में अनिवार्यतः नहीं पाये जाते हैं। इन गुणों की संख्या निश्चित नहीं है। द्रव्य के संदर्भ में इनका महत्व बहुत क्षीण है।

आलोचना

- प्राथमिक व गौण गुणों के रूप में यह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विभाजन अस्तित्वयुक्त नहीं है।

(ii) पुनः ये गुण कई बार अतिव्याप्त करते हैं। उदाहरणार्थ: स्पर्श के बिना विस्तार की कल्पना नहीं की जा सकती है

बर्कले के विचारों पर भी चर्चा कीजिए।

1/2

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	0.5	0.5	0.25	–	–	–
Grade	B	B	B	B	–	–	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) देश और काल के संदर्भ में काण्ट और लाईबनित्ज़ के मतों में आधारभूत अंतरों को रेखांकित कीजिये।

Underline the fundamental differences between the view of Kant and Leibniz about space and time.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चूंकि लाइबनित्ज एक बुद्धिवादी दार्शनिक है। अतः वे परम सत् के रूप में देश व काल का अस्तित्व स्वीकार नहीं करते है। लाइबनित्ज्य के अनुसार देश व काल प्रागनुभविक न होकर सापेक्ष एवं परस्पर निर्भर है। देश साहचर्य पर निर्भर है एवं काल अनुक्रम पर निर्भर है। लाइबनित्ज्य अनुसार यदि वस्तुएँ नहीं होगी तो देश नहीं होगा तथा देश नहीं होगा तो घटनाएँ नहीं होगी पुनः घटनाएँ नहीं होगी तो काल का अस्तित्व नहीं होगा। अतः देश व काल प्रागनुभविक नहीं है। वस्तुएँ स्थानिक एवं कालिक होती है, इससे भिन्न देश-काल का अस्तित्व नहीं है।

इसके विपरीत कांट अनुसार यदि देश व काल परम सत् नहीं है, ये प्रागनुभविक नहीं है एवं इनकी स्थिति व्यक्ति के जन्म के समय से नहीं है तो फिर वस्तुओं को स्थानिक (Spaced) एवं कालिक (in time) कैसे माना जा सकता है?

कांट अनुसार वस्तुतः देश व काल प्रागनुभविक है। ये मन की संवेदनशक्ति के दो मानसिक-रूप हैं जिनके माध्यम से ही संवेदनशक्ति संवेदनों का ग्रहण कर देश व काल के प्रागनुभविक रूप में रूपांतरित करती है, इस प्रकार प्राप्त ज्ञान की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामग्री को पर्सेप्ट्स कहा जाता है। इसके बिना ज्ञान को आकार प्रदान नहीं किया जा सकता है।
कांट मतानुसार हम देश व काल का अनुभव नहीं करते हैं बल्कि हम देश व काल में होकर अनुभव करते हैं। हम देश व काल में नहीं हैं बल्कि देश व काल हम में हैं। ये दो मानसिक चश्मों की भाँति हैं जिनसे होकर ~~सम्पूर्ण~~ ज्ञान प्रवाहित होता है।

उत्तर में अस्पष्टता और जटिलता है।
दार्शनिक भावों के प्रस्तुतीकरण को सरल बनाने का प्रयास करें।

(2)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	1	0.5	0	—	0.25	–
Grade	B	C	C	D	—	B	—

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(e) "सभी निषेध निर्धारण है" -हीगेल।

"Every negation is determination" –Hegel.

हीगल के दर्शन में भाव, अभाव एवं संभवन को प्रथम त्रय के रूप में स्वीकार किया गया है। हीगल के मतानुसार भाव सबसे सामान्य प्रत्यय है, जो कुछ इस जगत में है, वह भाव में अंतर्निहित है, भाव "Isness" मात्र है। स्पष्ट है कि इसी भाव में इसका अभाव छुपा है। अर्थात भाव की अवधारणा इस रूप में की जा सकती है कि यह नहीं है, अर्थात इसमें इसका अभाव है। इस प्रकार इस दृष्टि से भाव व अभाव दोनों समरूप (Identical) हो जाते हैं।

चूंकि भाव व अभाव समरूप है अर्थात भाव में ही अभाव निहित है एवं अभाव में ही भाव निहित है अतः दोनों में समन्वय के कारण संभवन की उत्पत्ति संभव होती है।

प्रश्न उठता है कि संभवन की प्राप्ति कैसे होती है?
हीगल के मतानुसार चूंकि भाव में ही अभाव निहित है अतः भाव के निषेध के द्वारा

हीगेल सभी निषेध को निर्धारण करते हैं। किन्तु कहते हैं कि निषेध का निषेध ही है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

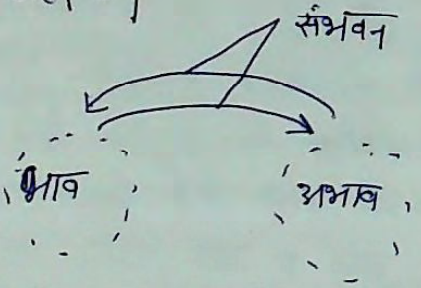

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संभवन की प्राप्ति होती है। इसी संदर्भ में हीगल का कहना है कि "प्रत्येक निषेध निर्धारण है"। आशय है कि भाव के निषेध के द्वारा ही संभवन का निर्धारण संभव हो पाता है।

आलोचना

स्पिनोज़ा ने हीगल के विरुद्ध "प्रत्येक निर्धारण को निषेध माना है" क्योंकि उनके मतानुसार द्रव्य (ईश्वर) निर्गुण व निराकार है। यहाँ निर्गुण से आशय गुणों का अभाव न होकर अनंत गुणों के असीमित मात्रा में होने से है। चूंकि मानव सीमित प्रकृति का है अतः उसके द्वारा किया गया कोई भी आरोपण ईश्वर के गुणों को सीमित कर देगा। अतः प्रत्येक निर्धारण निषेध है।

निषेध का कोई न कोई आधार तत्व होता ही है

1½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	0.5	0.5	–	–	0.25	–
Grade	B	D	D	–	–	B	

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) यद्यपि हीगेल की द्वंद्वात्मक विधि पश्चिमी दर्शन में नई नहीं थी क्योंकि प्लेटो ने इसका पहले उल्लेख किया है, फिर भी हीगेल तथा प्लेटो के द्वंद्ववाद में महत्वपूर्ण अंतर है। विश्लेषण कीजिये। 20

Although Hegel's dialictical method was not new in western philosophy as it found mention in Plato, Yet he has substantial differences with Plato's version of dialectics. Analyse. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पाश्चात्य दर्शन में यद्यपि द्वंद्वात्मक विधि नहीं थी परन्तु इसे हीगल ने पराकाष्ठा पर पहुंचाया। हीगल ने द्वंद्वात्मक विधि के आधार पर जगत के विकास, परिवर्तन, एकता, विविधता की व्याख्या करने का प्रयास किया है। हीगल अपनी द्वंद्वात्मक विधि के आधार पर निरपेक्ष प्रत्ययवाद की स्थापना करते हैं।

ध्यातव्य है कि हीगल व प्लेटो के संवाद में महत्वपूर्ण अंतर है।-

(i) हीगल ने बौद्धिक (Rational) एवं तार्किक आधार पर द्वंद्वात्मक विधि प्रतिपादित की है। हीगल की द्वंद्वात्मक विधि में हम जगत के विकास के संदर्भ में आनुभविक प्रमाणों की सत्यता व हद का निर्धारण करते हैं परन्तु इसके बावजूद यह विधि आनुभविक नहीं बनती अपितु बौद्धिक ही बनी रहती है।
प्लेटो के संदर्भ में यह सही नहीं है।

(ii) हालांकि हीगल प्लेटो द्वारा इस विधि के आधार पर स्थापित प्रत्ययों की पिरामिडीय व्यवस्था को स्वीकार करते हैं परन्तु उनके अनुसार प्लेटो की पिरामिडीय व्यवस्था में कुछ दोष हैं।-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) प्लेटो सर्वोच्च प्रत्यय को उच्च स्तर पर स्थापित करने के कारण की व्याख्या नहीं कर पाए हैं।

(ख) प्लेटो यह व्याख्या नहीं कर पाए हैं कि विभिन्न वस्तुएँ उनके विशिष्ट प्रत्ययों से ही क्यों प्रभावित होती हैं।

वस्तुतः प्लेटो का प्रत्ययवाद अमूर्त प्रत्ययवाद है जबकि हीगल का प्रत्ययवाद मूर्त प्रत्ययवाद है।

सराहनीय प्रयास, किन्तु प्रश्न के संदर्भ में है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

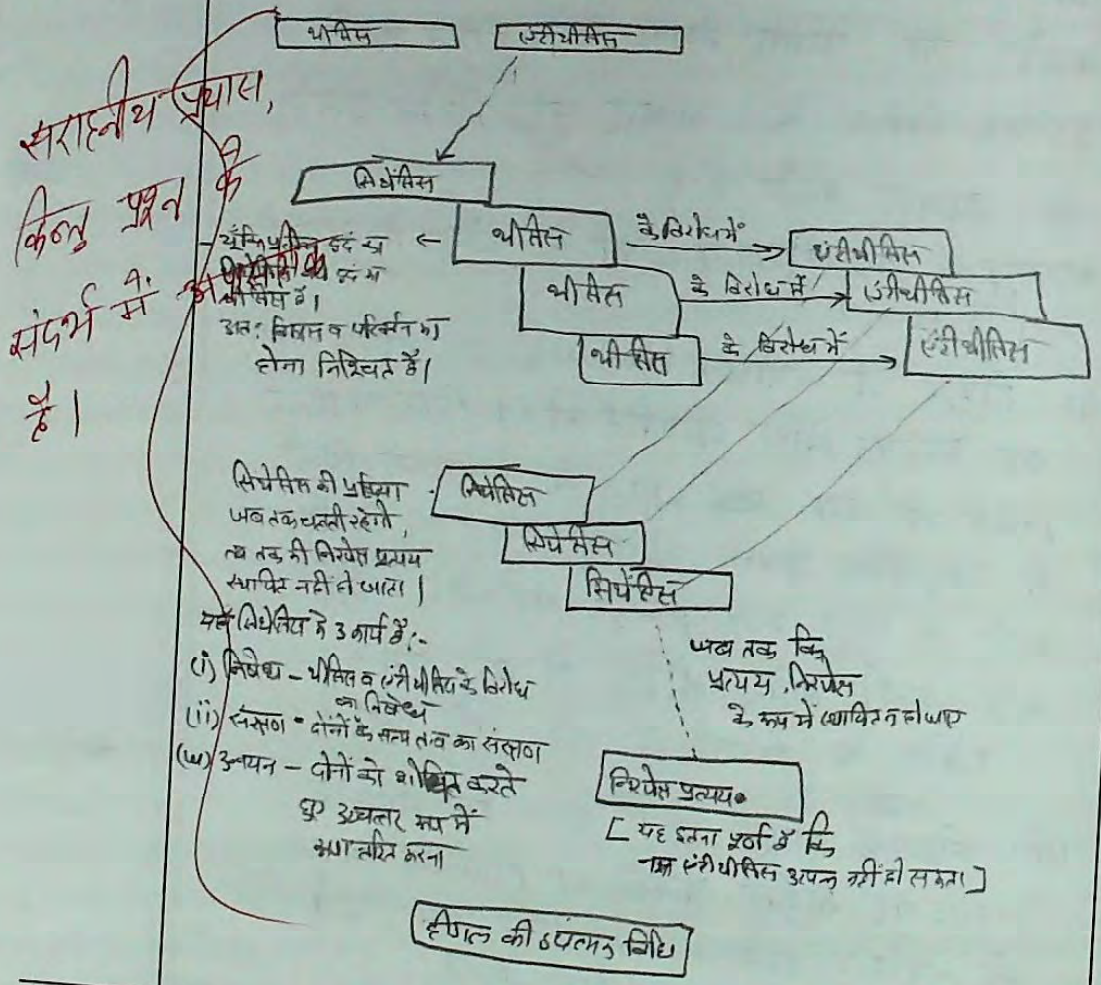

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) चित्र से स्पष्ट है कि जहाँ हीगल की द्वंद्वात्मक विधि पक्ष, विपक्ष एवं संपक्ष के माध्यम से अमूर्त से मूर्त की ओर विकसित हो रही है, वहीं प्लेटो इस विधि के माध्यम से अमूर्त प्रत्ययवाद की व्याख्या करते हैं।

हीगल का प्रत्ययवाद अमूर्त न होकर मूर्त है।

पुनः प्लेटो के दर्शन में हीगल की भाँति भाव, अभाव एवं संभवन के रूप में प्रथम त्रय स्वीकार नहीं किए गए हैं। हीगल मतानुसार उसकी द्वंद्वात्मक विधि में प्रत्येक उच्चतर स्तर में निम्नतर स्तर स्पष्ट रूप से (explicitly) निहित है, वहीं निम्नतर प्रत्यय में उच्चतर प्रत्यय अंतर्निहित (implicitly) व्याप्त है।
परन्तु प्लेटो के दर्शन में ऐसा नहीं है। प्लेटो का प्रत्यय इस जगत में न होकर पारलौकिक जगत में स्थित है।

स्पष्ट है कि हीगल की द्वंद्वात्मक विधि, प्लेटो से भिन्न है, हालांकि इसे प्लेटो की द्वंद्वात्मक विधि का पूर्ण विकसित रूप माना जा सकता है।

1½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	0.5	.25	.25	–	0.25	–
Grade	A	A	A	B	–	B	–

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) क्या आपके दृष्टिकोण में कांट द्वारा प्रतिपादित देश काल की अवधारणा अज्ञेयवाद की ओर ले जाती है? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क प्रस्तुत कीजिये। 15

Does Kant's concept of space and time lead to agnosticism in your view? Give reasons for your answer. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कांट के मतानुसार मन की भूमिका यही है कि वह संवेदनों के रूप में प्राप्त ज्ञान सामग्री को व्यवस्थित कर ज्ञान के रूप में ढाल दे। इस हेतु मन 3 स्तर पर कार्य करता है। (i) संवेदनशक्ति (ii) बुद्धि (iii) प्रज्ञा।

देश व काल का संबंध संवेदनशक्ति (Sensibility) से है, कांट मतानुसार देश व काल प्रागनुभविक है। कोई भी इन्द्रिय संवेदन (sense-data) देश व काल के माध्यम से ही ग्रहण किया जा सकता है। बिना देश व काल के प्रागनुभविक रूप ग्रहण किए हम वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते

कांट द्वारा प्रतिपादित देश व काल की अवधारणा अज्ञेयवाद की बजाय ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करती है क्योंकि

(i) संवेदनशक्ति देश व काल के माध्यम से ही संवेदनों को प्रत्यक्ष (Percepts) के रूप में ग्रहण करती है, बिना देश काल के पर्सेप्ट ग्रहण नहीं किए जा सकते हैं।

(ii) देश व काल मानसिक चश्मे हैं। कांट मतानुसार हम देश व काल का अनुभव नहीं करते हैं अपितु हम देश व काल में होकर अनुभव करते हैं। हम देश व काल में नहीं हैं, अपितु देश व काल हम में हैं। अर्थात देश व काल प्रागनुभविक मानसिक चश्मे हैं जिनसे होकर ही संवेदनशक्ति ज्ञान सामग्री (Percepts) को ग्रहण कर पाती है।

(iii) बुद्धि अपनी कोटियों के माध्यम से इन

(परीक्षक टिप्पणी: A. यह स्पष्ट करें कि ऐसा क्यों प्रतीत होता है कि देश-काल की अवधारणा अज्ञेयवाद की ओर ले जाती है।)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अव्यवस्थित एवं असंबंधित पर्सेप्ट्स को व्यवस्थित कर ज्ञान को आकार (form) प्रदान करती है। इस रूप में प्राप्त ज्ञान को "Knowledge Proper" की संज्ञा देते हैं।

(iv) स्पष्ट है कि ज्ञान के निर्माण में पर्सेप्ट्स (अनुभव) व कॉन्सेप्ट्स (बुद्धि) दोनों का योगदान है। चूँकि बिना पर्सेप्ट्स ज्ञान संभव नहीं है, एवं बिना देश व काल हम पर्सेप्ट्स प्राप्त नहीं कर सकते, अतः ज्ञान की प्राप्ति हेतु देश-काल का प्रागनुभविक होना आवश्यक है।

पुनः कांट मतानुसार जब इन्द्रिय जगत के इन कॉन्सेप्ट्स को न्यूमेनिक जगत पर आरोपित किया जाता है तो "अनुभवातीत भ्रम" की स्थिति उत्पन्न होती है क्योंकि शुद्ध बुद्धि (pure reason) के स्तर पर बिना प्रत्यक्षों (percepts) के कन्सेप्ट्स को लागू किया जाता है। कांट न्यूमेना को अज्ञेय व अज्ञात मानते हैं। इस दृष्टिकोण से कांट का दर्शन अज्ञेयवाद की ओर प्रशस्त होता है क्योंकि देश व काल से परे स्थित सत्ताओं के ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है।

स्पष्ट है कि कांट देश व काल के माध्यम से ही बुद्धिवाद व अनुभववाद का समन्वय कर पाते हैं, व्यावहारिक जगत (फिनोमिना) के संदर्भ में ये अज्ञेयवाद का मार्ग प्रशस्त नहीं करते हैं बल्कि ज्ञान के निर्माण में सहायक हैं।

2

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक विषय)

प्रश्नपत्र- प्रथम

[प्लेटो, अरस्तू, तर्कवाद (डेकार्ट, स्पिनोज़ा, लाइबनित्ज़), अनुभववाद (लॉक, बर्कले, ह्यूम), काण्ट, हीगल]

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों में मुद्रित हैं।

उम्मीदवार को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी प्रश्नों में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी प्राधिकृत माध्यम में लिखे जाने चाहिये जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। प्राधिकृत माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI** and **English** Language.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation